संत–गणिका
संवाद
(कामाध्यात्म दर्शन)
रचयिता
आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय "मधुप"

संत–गणिका
संवाद
(कामाध्यात्म दर्शन)
रचयिता
आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय "मधुप"

लेखक/प्रकाशक :

आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय

शारदा नगर, बी.आई.डी. लोहरदगा

झारखण्ड - 835302

मो. 9835976162

रूपसज्जा : एन. के. धीमान

मुद्रक : **हवाई प्रिंटर्स**

रादौर (यमुनानगर) हरियाणा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित ©

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ

श्री तुलसी दिवस 25 दिसम्बर सन् 2024, सम्वत् 2081

मूल्य : ₹ 30

आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय ''मधुप'' के द्वारा रचित ग्रंथ

1. गणिका सन्त सम्वाद
2. अनुभूतियों की प्रगीताञ्जलि भाग-1
3. अनुभूतियों की प्रगीताञ्जलि भाग-2
4. अनुभूतियों की प्रगीताञ्जलि भाग-3
5. अविश्वासी मित्र (उपन्यास)
6. हिन्दी साहित्य गद्याञ्जलि।

ग्रंथ प्राप्ति का स्थान

आचार्य विष्णुदत्त पांडेय ''मधुप''

शारदा नगर, लोहरदगा (झारखंड)

मो. : 9835976162

लेखक परिचय

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक आचार्य श्री विष्णु दत्त पाण्डेय जी मेरे पिता जी हैं। आप प्रारम्भ से ही सरल एवं सरस स्वभाव के धनी हैं। आपका जन्म झारखण्ड प्रदेश के अन्तर्गत गुमला जिला के कुलकुपी ग्राम दिनांक 05 जनवरी 1970 को हुआ था। आपके पिता अर्थात मेरे पितामह डॉ विन्ध्येश्वर पाण्डेय (पं. विश्ववसेनाचार्य जी) संस्कृत जगत के एक प्रतिष्ठित विद्वान थे। मेरे पूज्य पितामह डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय जी की अनेकानेक लोकोपकारक रचनाएँ प्रकाशित हैं। लेखक की माताजी पूजनीया श्रीमती यज्ञसेनी देवी जी का सान्निध्य और आशीर्वाद वर्तमान में लेखक को प्राप्त है।

प्रारम्भिक शिक्षा– मेरे पिताजी की प्रारम्भिक शिक्षा उत्तरप्रदेश के हमीरपुर जिलान्तर्गत झलोखर ग्राम में हुई, वहीं रहते हुए उन्होंने बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी झाँसी से अपनी स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद वाराणसी जाकर वहाँ से हिन्दी एवं संस्कृत विषय में एम.ए. एवं बी.एड. की शिक्षा प्राप्त की। आपने बी. एच. यू. सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय एवं काशी विद्यापीठ तीनों ही विश्वविद्यालयों से क्रमशः अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त की। तदनन्तर 1996 से लेखक अपने गृहराज्य झारखण्ड के लोहरदगा जिलान्तर्गत शीला अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर में हिन्दी एवं संस्कृत विषय के आचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

संस्कृत शास्त्रों के संस्कार से ओतप्रोत अपने पिता के संसर्ग में बाल्यकाल से ही रहने के कारण मेरे पिताजी साहित्य की ओर अग्रसरित हुए। जिसके फलस्वरूप हिन्दी भाषा को माध्यम बनाकर उन्होंने संस्कृत के प्रभाव को प्रस्तुत करते हुए अपनी लेखनी चलाई। हिन्दी साहित्य के प्रति आपका झुकाव जन्मजात था। अतः बाल्यकाल से ही आपने हिन्दी साहित्य में रचना करना प्रारम्भ कर दिया था।

प्रतिभावान लेखक की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं –

गणिका सन्त सम्वाद, अनुभूतियों की प्रगीताञ्जलि (तीन भागों में), अविश्वासी मित्र (उपन्यास), गद्याञ्जलि।

हिन्दी साहित्य में संस्कृतनिष्ठ रचनाओं को प्रस्तुत करना लेखक का मूल उद्देश्य रहा है। उन्होंने इसके लिए अपनी रचनाओं में यथासम्भव प्रयास किया है।

सुधीपाठकवर्ग प्रस्तुत रचनाओं का रसास्वादन करते हुए अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत कर सकते हैं, आपके सुझावों का सदा स्वागत है।

अभिनव आनंद पाण्डेय

सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (लब्धस्वर्णपदक)

प्रस्तावना

इस संसार में कोई किसी का संगी, साथी, सगा-सम्बन्धी नहीं है, सब मतलब के गरजी है। अपना तो केवल एक भगवान ही है, उसी के गीत गाओ, उसी से प्रेम करो। माता-पिता, भाई-बंधु, स्त्री-पुत्र, अपना शरीर, धन, मकान, मित्र और परिवार ये सब ममता के कच्चे धागे हैं। मनुष्य ममता के इन कच्चे धागों को बटोर कर एक मजबूत रस्सी बना ले और उसे भगवान के चरणकमलों से बांध दे।

जननी जनक वंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।।
सबकै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बाँधि वर डोरी।।

ममता के ये धागे कच्चे इसलिए हैं, क्योंकि जरा सा स्वार्थ टकराया, ये टूट जाते हैं। ममता सांसारिक प्राणियों और वस्तुओं से होती है, किंतु भगवान से प्रेम अलौकिक होता है। ममता दुःखरूप वासना है, परंतु भगवान का प्रेम मोक्षप्रद है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर एक गणिका और एक संत दोनों बैठे होते हैं। गणिका- काम और श्रृंगार की ओर खींच रही है और संत- वैराग्य और मोक्ष की ओर आकर्षित कर रहे हैं। दोनों का वाग्द्वंद अद्भुत है। जो अन्तःप्रज्ञा और तर्कप्रज्ञा के आधार पर अनादि एवं निष्कर्ष रहित 'कामाध्यात्म' के रहस्य को तत्वतः जानना व समझना चाहते हैं। जो कुंठ से वैकुंठ के सहज यात्री बनना चाहते हैं, उनके लिए यह शिखरशील वाग्द्वंद आपको एक ओर आनन्द की पुष्करिणी में सर्वांग रस स्नान के लिए उतरेगा तो दूसरी ओर निर्मन समरसता एवं अन्तस्तपश्चरण के ऊर्ध्वाम्नाय- यान पर भी बिठायेगा। यह 'कामाध्यात्म दर्शन' शीर्षक- मूल रूप से 'रम्भा-शुक-सम्वाद' से परम्परा प्राप्त है। गणिका व संत दो व्यक्ति हैं। ये दोनों निमित्तमात्र हैं, वस्तुतः यहाँ भारतीय चिंतन, अनुभूति और आचरण की प्रयोगशाला में काम तथा अध्यात्म का जो संहर्ष और द्वंद है, उसी का सिद्धांत व निष्कर्ष उपस्थित है। यह काम और मोक्ष का सम्वाद है। यह राग और वैराग्य का सम्वाद है। गणिका काम की प्रतीक है और सन्त मोक्ष के प्रतीक हैं। वैराग्य के लिए शरीर की रचना को समझना आवश्यक है। विषयों में रमण करने वाले सांसारिक भोगियों की प्रवृत्ति स्वतः ही वासानाओं की मूर्तरूप देह की ओर अधिक देखी जाती है। इसी के द्वारा वे इस देह से सुख-दुःख, भय, शोक, रोग, भोग आदि परिणाम तथा फल निरन्तर प्राप्त किया करते हैं। दूसरी ओर योगी इसी काया के द्वारा त्याग भाव से अनासक्त होकर अपने भोगों की निवृत्ति तथा भोगों की कामना को त्याग करके परम सुख मोक्ष की ओर चल पड़ते हैं। आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय द्वारा रचित 'गणिका-संत-सम्वाद' इसी का परिवाहक है।

आचार्य भगवती प्रसाद शुक्ल
रादौर (यमुनानगर) हरियाणा

गणिका

परिमल पूरित पराग युत पद्मसर, दर्शक के मन को हमेशा मोह लेता है।
पास में सुमन वन मनहर सुम युत, जिससे लेकर गंध गंधवाह देता है।।
मधुकर फूल पर मधु हित मंडराते, उनकी सुध्वनि पांथ मन हर लेता है।
ऐसे उपवन में न रमण किया जो नर, जीवन समग्र वह व्यर्थ ही खो देता है।।

एक अत्यंत मनोहर कमल सरोवर है। यह सरोवर सुगंध से परिपूर्ण और पराग से युक्त है, जो दर्शक के मन को हमेशा ही अपनी ओर आकर्षित करता है। उसके पास में ही मनोहर पुष्पों से युक्त पुष्प उद्यान है जिससे सुगंध को ग्रहण करके पवन चारों ओर फैला देता है। भंवरे फूल पर मधु ग्रहण करने के लिए मंडरा रहे हैं। उनकी सुंदर ध्वनि राहगीरों के मन को आकर्षित करता है। ऐसे सुंदर उपवन में जिसने रमण नहीं किया वह व्यक्ति अपना जीवन व्यर्थ में ही खो देता है।

संत

नवल जलद सम देह मनहर श्याम, कामकोटि छवि हर हर मन वास है।
मुनि मन मानस मराल वनमाल धर, सज्जन चकोर शशि घट घट वास है।।
प्रणात सकल पाल काल करि मृगपति, पाप पुंज मुंज वहि दया जलवास है।
ऐसे वासुदेव पद कमल में जिसने न, मन को रमाया व्यर्थ जीवन विकास है।।

नवीन मेघ के समान जिसका शरीर श्याम एवं मनोहर है। जिनकी सुंदरता करोड़ों कामदेव की सुंदरता को हरण करने वाला है और शंकर जी के मन में जिनका निवास है। जो मुनियों के मन रूपी मानसरोवर में हंस के समान निवास करते हैं और जो वनमाला धारण किए हुए हैं, जो सज्जन रूपी चकोर के लिए चंद्रमा हैं तथा जिनका निवास प्रत्येक घट में, शरीर में है। जो सभी शरणागतों का पालन करते हैं। जो काल रूपी हाथी के लिए सिंह के समान हैं। पाप समूह रूपी मूंज, एक प्रकार की घास को जलाने के लिए जो अग्नि के समान हैं तथा जो दया के समुद्र हैं। ऐसे वासुदेव भगवान के चरण कमल में जिसने मन को नहीं रमाया, उसके जीवन का विकास व्यर्थ है।

गणिका

केश तनु व्याल बाल सदृश लहरदार, कंज गर्भ सदृश कपोल रक्त वर्ण है।
नयन कुरंग बाल नयन समान शुभ, कुच द्वय स्वर्ण कुंभ पयपूर्ण सम है।।
शाटिका हरित वर्ण युत देह लगता है, मानो सुमयुत लता पत्र परिपूर्ण है।
ऐसी छवि युत रमणी के साथ जिसने न, रमण किया जीवन उसका सुव्यर्थ है।।

जिसके केश पतले काले सर्प के बालक के समान लहरदार हैं। जिसके कपोल कमल के गर्भ के समान रक्त वर्ण के हैं। जिसके नेत्र हिरण शिशु के नेत्र के समान सुंदर हैं। जिसके पयोधर(स्तन) दुग्ध से परिपूर्ण स्वर्ण घट के समान सुंदर हैं। हरी साड़ी से युक्त शरीर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो फूलों से भरी हुई कोई लता हरे-भरे पत्तों से परिपूर्ण हो। ऐसी सुंदर रमणी के साथ जिसने रमण नहीं किया उसका जीवन पूरी तरह व्यर्थ है।

संत

भाल सुविशाल ऊर्ध्वपुण्ड्र युत मनसिज, कारमुक बाण सम लगता ललित है।
नयन कमल सम पीतपटधारी शुभ, पद भूमिसुर वक्ष सुंदर कलित है।।
शंख चक्र गदा पद्म युत पीन चार भुज, चरण जलज वज्र अंकुश लसित है।
ऐसे शेषशायी कंज अंघ्रि में रमाया मन, जिसने उसीका बेल जीवन फलित है।।

जिन भगवान नारायण का मस्तक अत्यंत विशाल है और ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक से युक्त है। वह ऐसा प्रतीत होता है मानो कामदेव के धनुष मे बाण चढ़ाया हुआ हो। जिनके नेत्र कमल के समान हैं। जो पीतांबर धारण किए हुए हैं। जिनका वक्ष स्थल भृगु पद के सुंदर चिन्ह से अंकित है। शंख चक्र गदा और पद्म धारण किए हुए जिनके पुष्ट चार भुजाएं हैं। जिनके चरण में वज्र और अंकुश के चिन्ह अंकित हैं। ऐसे शेषशायी भगवान नारायण के चरणों में जिसने अपने मन को रमा लिया उसी का जीवन सफल है।

गणिका

नवल वसन धृत दसन चमकदार, वदन प्रफुल्ल फुल्ल नीरज समान है।
कटि तनु मनहर भूषण सुसज्जित है, तीक्ष्ण नेत्र कोर मार धनुष समान है।।
गज इव चाल पद घुंघरू छनकदार, देह छवि धाम काम भामिनी समान है,
ऐसी छवि युत रमणी के साथ जिसने न, रमण किया मनुज परम अजान है।।

जिसने नवीन वस्त्र धारण किया हुआ है। जिसके सुंदर दांत चमकदार हैं। जिसका मुख मंडल खिले हुए कमल पुष्प के समान प्रफुल्लित है। पतली कमर है जो आभूषणों से सुसज्जित है। आंखों के तीखे कोने कामदेव के धनुष के समान है। जिसकी चाल हाथी के समान है। जिसके पैर में सुंदर घुंघरू बज रहे हैं। शरीर सुंदरता का भवन है जो काम की पत्नी रति के समान सुंदर है। ऐसी सौंदर्य युक्त युवती के साथ जिसने रमन नहीं किया वह मनुष्य परम अज्ञानी है, नासमझ है।

संत

अलक भ्रमर तुंड कंज पर मंडरात, अखिल भुवन वास आस्य रदयुत है।
कान में कुंडल लोल मनसिज मीन इव, सकल शरीर कांति शत रवि सम है।।
नवनीत कर लिए मुख दधि लपटाए, देह धूलि धूसरित हर सम वेश है।
ऐसे बाल धेनुपाल पद में रमाया मन, जिसने उसी का सब जीवन सफल है।।

केश रूपी भौंरे मुख रूपी कमल पर मंडरा रहे हैं। चौदहों भुवनों का निवास स्थान जिनका मुख सुंदर दंत पंक्तियों से युक्त है। जिनके कानों में चंचल कुंडल इस तरह शोभायमान हो रहे हैं जैसे कामदेव की मछली हों। संपूर्ण शरीर की कांति सैकड़ों सूर्य के समान है। जो अपने हाथों में नवनीत मक्खन लिए हुए हैं, मुख में जिन्होंने दही लिपटा रखा है, जिनके शरीर धूल से धूसरित हो रहा है। इस प्रकार जिनका वेश शंकर जी के समान प्रतीत हो रहा है। ऐसे बाल गोपाल भगवान श्री कृष्ण के चरणों में जिसने अपने मन को रमा दिया उसी का जीवन सफल है।

गणिका

अलक कपोल तक लटक रहे हैं शुभ, नयन कमल मुकुलित कुछ-कुछ है।
सुरत जनित श्रम जल से ललाट क्लिन्न, थकित सकल देह लेटी वक्ष बीच है।।
मुख पर मंद हास चन्द्रहास नव सम, कुच पीन तन तैल परिमल युत है।
ऐसी कामिनी के अधरामृत का पान कर, पाया वह मनुज परम भाग्यवान हैं।।

जिसके सुंदर केश कपोल तक लटक रहे हैं। जिसके नेत्र रूपी कमल कुछ-कुछ अधखुले से हैं। रति क्रीड़ाजन्य पसीने से जिसका मस्तक गीला हो गया है। जिसका सारा शरीर थक गया है और जो अपने प्रियतम के वक्षस्थल पर लेटी हुई है। मुख पर मंद मंद हंसी चंद्रमा की शीतल किरणों के समान लग रही है। जिसके स्तन बड़े हैं तथा सुगंधित इत्र से रचे बसे हैं। ऐसी कामिनी (युवती) के अधररूपी अमृत का जो पान कर पाया वही व्यक्ति अत्यंत भाग्यशाली होता है।

संत

चरण शरद तामरस निभ सुमसृण, निज जन मन कोक हिमकर कर है।
भंग कटि पट पीत युत शत काम जय, कर कंज अंगुली बांसुरी रंध्र पर है।।
नीप नग छाया पर वंशिका वादन रत, ध्वनि सुन ग्वाल बाल जड़वत खड़े हैं।
ऐसे जग मनहर श्याम में जिसका मन, रम पाया वह नर अति भाग्यवान है।।

जिन भगवान श्रीकृष्ण के चरण शरद् कालीन लाल कमल पुष्प के समान सुंदर और चिकने हैं। जो अपने भक्त के मन रूपी चकवा पक्षी के लिए चंद्रमा की किरणों के समान हैं। जिनकी कमर टेढ़ी है। जो पीतांबर धारण किए हुए हैं। जो अपनी सुंदरता से सैकड़ों कामदेव को जीत रहे हैं। जिनके कर कमल की उंगलियां बांसुरी के छिद्र पर अवस्थित हैं। जो कदम्ब वृक्ष की छाया तले वंशी बजाने में लीन हैं। जिनके वंशी की सुंदर ध्वनि को सुनकर ग्वाल बाल जड़ पत्थर की तरह स्थिर हो गए हैं। ऐसे संसार के मन को हरण करने वाले श्याम सुंदर भगवान श्री कृष्ण में जिसका मन लीन हो पाया, रम पाया वह मनुष्य अत्यंत भाग्यशाली होता है।